शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

निराला की रचनाधर्मिता के विविध आयाम

डॉ.चन्द्रकान्त तिवारी
यूजीसी नेट, यू-सेट
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
बीएसएईआई, फरीदाबाद,
दिल्ली एनसीआर, भारत

शोध संक्षेप

साहित्यकार का जीवन-संघर्ष उसके परिवेश, आस-पास की घटित घटनाओं से सम्बद्ध होता है। व्यक्तित्व का रचनाकर्म में महत्वपूर्ण स्थान होता है जिसका प्रभाव प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से रचनाओं में लक्षित किया जा सकता है। निराला ने पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक स्तर पर जीवन भर संघर्ष किया, उनके इस संघर्ष ने उनके व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। जीवन-जगत के वास्तविक अनुभवों की अभिव्यक्ति निराला के पद्य साहित्य में हुई है। निराला का महाप्राण व्यक्तित्व किस प्रकार अपने निजी संघर्षों को अपनी रचनाओं के माध्यम से सार्वजनीय संघर्षों में परिणत करता है, इसको समझने का प्रयास किया गया है।

निराला की रचनाधर्मिता और व्यक्तित्व

निराला का जीवन अपने तत्कालीन परिवेश से भी प्रभावित होता रहा। उसकी रचना-दृष्टि को प्रभावित करने में उसके जन्मजात एवं अर्जित गुणों की महती भूमिका रही। उनका लक्ष्य था व्यक्ति को उसकी अंतर्निहित शक्ति का बोध कराना। वस्तुतः व्यक्ति को उसकी विराटता का बोध कराना एवं समस्त मानवों की अन्तर्निहित समता ही निराला के जीवन-दर्शन का आधार था। निराला की काव्य-भाषा काव्य रूपों के वैविध्य के अनुसार परिवर्तित होती रही। निराला की रचनाओं में उनके व्यक्तित्व का दर्शन होता है और उनके परिष्कृत व्यक्तित्व के मूल में उनकी जीवन धारा की छाप है। निराला का संपूर्ण जीवन संघर्षों में बीता, उन्हें आत्मीय जनों का सानिध्य कम समय के लिए मिला। लेकिन पारिवारिक सुख निराला के भाग्य में नहीं था।

"राजे ने अपनी रखवाली की;
किला बनाकर रहा
बड़ी-बड़ी फौजें रखी
चापलूस कितने सामन्त आये।
मतलब की लकड़ी पकड़े हुए।
कितने ब्राह्मण आये।
पोथियों में जनता को बाँधे हुए।
कवियों ने उनकी बहादुरी के गीत गाये।
लेखकों ने लेख लिखे
ऐतिहासिकों ने इतिहास के पन्ने भरे,
नाट्य कलाकारों ने कितने नाटक रचे,
रंग मंच पर खेले।"

निराला का महाप्राण व्यक्तित्व किस प्रकार अपने निजी संघर्षों को अपनी रचनाओं के माध्यम से सार्वजनीन संघर्षों में परिणत करता है, इसको समझने का प्रयास किया गया है। निराला के आध्यात्मिक प्रेरणा स्रोतों ने उनके व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका का योगदान दिया,

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

फलस्वरूप उनके जीवन में निर्भयता, साहस तथा उदात्त चेतना की सृष्टि हुई है।

निराला का व्यक्तित्व आरम्भ से ही द्वंद्वात्मक चेतना से संघटित हुआ था। उनकी द्वंद्वात्मक चेतना का विश्लेषण करते हुए डॉ.रामविलास शर्मा ने लिखा है- "निराला का व्यक्तित्व जितना आत्म-केन्द्रित है, उतना ही वस्तुकेन्द्रित।" निराला अपनी दीर्घकालीन काव्य-यात्रा के क्रम में अनेक मनोभूमियों से होकर गुजरे जिस कारण उनका अनुभव जगत अत्यन्त व्यापक और विस्तारमय है। निराला का सम्पूर्ण जीवन-संघर्ष दर्द की एक गहरी रेखा है, वे जीवन भर विषम परिस्थितियों से जूझते रहे और अपराजेय योद्धा की भाँति जीवन का युद्ध लड़ते रहे।

निराला का जीवन अपने तत्कालीन परिवेश से भी प्रभावित होता रहा। उनकी रचना-दृष्टि को प्रभावित करने में उनके जन्मजात एवं अर्जित गुणों की महती भूमिका रही। उनका लक्ष्य था व्यक्ति को उसकी अंतर्निहित शक्ति का बोध कराना। वस्तुतः व्यक्ति को उसकी विराटता का बोध कराना एवं समस्त मानवों की अन्तर्निहित समता ही निराला के जीवन-दर्शन का आधार था। निराला की काव्य-भाषा काव्य रूपों के वैविध्य के अनुसार परिवर्तित होती रही।

छायावाद और निराला

हिन्दी साहित्य में छायावाद का उदय एक नयी मानवीय उमंग, आकांक्षा, स्वप्न और बदलते हुए जनवादी मूल्यों की अरूणिमा का संदेश लेकर आया था। युग के बदलाव का संदेश छायावाद का प्रमुख स्वर था। यह मात्र एक साहित्यिक आंदोलन नहीं था, वह नए युग की बदलती हुई मानवीय चेतना के अनुभावन, मनन, चिंतन और अनुगायन था। यह युग बीसवीं सदी के बदलते हुए सामाजिक जीवन, चिंतन, मनन, वाचन और कर्म की सांस्कृतिक पुर्नरचना था। निराला इस बदलाव के सबसे ज्यादा विश्वसनीय और प्रामाणिक संदेश वाहक थे।

निराला आम आदमी थे। अतः संर्घषरत रहकर जीवन और जगत की कड़वी सच्चाई को देखने एवं जूझने का अवसर उन्हें खूब मिला। मानवता और मानव जीवन के आदर्शों के रेशे-रेशे से परिचित होने का भी उन्हें भरपूर मौका मिला। निराला के विचार इस संसार से दूर किसी कल्पना लोक की उपज नहीं है, भारतीय समाज और हिन्दी साहित्य की यथार्थ समस्याओं से उनका बहुत गहरा सम्बन्ध है।

निराला मानवतावादी कवि थे। मानवतावादी धरातल पर व्यक्ति को उसकी अन्तर्निहित शक्ति का बोध कराना ही उनका लक्ष्य था वे मानव-मानव की समानता के पोषक थे। अपने दार्शनिक चिंतन के आधार पर वे अपनी इसी लक्ष्य की सिद्धि करना चाहते थे। वस्तुतः व्यक्ति को उसकी विराटता का बोध एवं समस्त समता ही निराला के दार्शनिक चिंतन का आधार है।

निराला और गांधीवाद

निराला एक सीमा तक गाँधीवाद के साथ हैं, उस सीमा तक जहाँ गाँधीवाद वर्णव्यवस्था, हिन्दू-मुस्लिम भेदभाव, अंग्रेजों की मूल दासता का विरोधी है, किन्तु निराला समाज में जिस आमूल परिवर्तन के पक्षपाती है वह गांधीवाद की सीमाएँ नहीं स्वीकार करता। वह चोटी और दाढ़ी को मिलाकर नहीं, दोनों का सफाया करके-हिन्दू धर्म और इस्लाम, दोनों की साम्प्रदायिक रूढ़ियों को मिटाकर-सामान्य मानवता की भूमि पर हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक हैं। हरिजनों का मन्दिर-प्रवेश उनके लिए काफी नहीं है। वह मूर्ति पूजा के भी विरोधी हैं, उन सन्तों की तरह जिन्होंने मन्दिर में मूर्ति पूजन के अधिकार के

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

लिए न लड़कर देवता और मूर्ति दोनों का बहिष्कार करके निर्गुण ब्रह्म की साधना की। निराला के लिए पूंजीपति जनता के धन के संरक्षक नहीं है वे जनता के शोषक हैं, जो राजनीतिज्ञों और साहित्यकारों दोनों को अपनी धुन पर नचाते है। अंग्रेजी राज से मुक्ति पाने के लिए निराला, जमींदार-विरोधी किसान-संघर्षों को अनिवार्य समझाते हैं, गाँधीवाद इस तरह के वर्ग संघर्ष को भारतीय संस्कृति का विरोधी मानता है।

निराला के लिए फूल का खिलना संघर्ष की परिणति है। रूप हो चाहे गंध-फूल के लिए यह सहज प्राप्य नहीं है। 'कर्म जीवन के दुस्तर क्लेश' भेद कर वनबेला ऊपर आती है। उसके मस्तक पर पृथ्वी और आकाश का ताप और त्रास भी है। कोई आश्चर्य नहीं, निराला कली के खिलने को क्रान्तिकारी परिवर्तनों का प्रतीक भी मान लेते थे -

"टूटे सकल बन्ध
कलि के दिशा-ज्ञान-गात हो बहे गन्ध।" पृ. सं.-14,राग विराग

अरे वर्ष के हर्ष!
बरस तू, बरस-बरस रसधार!
पर ले चल तू मुझको,
बहा, दिखा मुझको भी निज
गर्जन-भैरव-संसार (बादल-राग-1 राग-विराग, पृ. सं.-47)

बार-बार गर्जन
वर्षण है मूसलधार
हृदय थाम लेता संसार
सुन-सुन घोर वज्र-हुंकार।(बादल-राग-2 पृ सं.-49,राग-विराग)

बादल, गरजो!-
घेर-घेर घोर गगन, धाराधर ओ!
वल्लित ललित, काले घुँघराले,
बल कल्पना के-से पाले,
विद्युत-छवि उर में, कवि, नवजीवन वाले!
वज्र छिपा, नूतन कविता (उत्साह)

वर्षा सृजन का प्रतीक है, निराला के लिए ध्वंस का भी। जैसे राग के साथ विराग, वैसे ही सृजन के साथ ध्वंस। निराला उल्लस और विषाद के ही कवि नहीं, संघर्ष और क्रान्ति के भी कवि हैं। इस क्रान्ति का लक्ष्य है, स्वाधीन शोषण-मुक्त समाज। भारत में तरह-तरह के क्रान्तिकारी हुए हैं किन्तु भारत में क्रान्ति नहीं हुई, अंग्रेजी कानून के मातहत विभाजित राष्ट्र को आजादी मिली। प्रेमचंद और निराला का वह अन्तर इन कविओं में देखा जा सकता है। (पृ सं.-16,17 राग विराग)

"जीर्ण बाहू है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर!
चूस लिया है उसका सार
हाड़ मात्र ही हैं आधार,
ऐ जीवन के पारावार।"

निराला का संपूर्ण जीवन तथा साहित्य संघर्ष-प्रस्फुटित, आवेग पूर्ण सर्वप्लवी ऐसा प्रवाह है, जो न केवल स्वेद-कणों से वरन अपने रक्त-कणों से उसकी गति और विस्तार में तीव्रता एवं गहनता भरता चलता है। जीवन की कठिनतम कराल-कठोर परिस्थितियाँ, विरोध के चक्रव्यूह, उपेक्षापूर्ण अनर्गल आरोप तथा अविवेक जनित उपहास साहित्यकार के जीवन-स्वर्णा को परखने की काली कसौटियाँ मात्र हैं, उसकी प्रवाध-स्वच्छ-गति को बांधने वाली बेड़ियाँ नहीं। निराला का बहुमुखी विशाल सृजन इसका प्रजर-प्रमर साक्षी है। सच तो यह है कि जो साहित्यकार युग की प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष बाधाओं को हटाते हुए उसके हलाहल

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

को पीकर अपने आत्म-रस से उसे अमूत में परिगात करने की क्षमता नहीं रखता उसे शिवत्व की गरिमा भी नहीं मिलती। (छायावाद के आधार स्तम्भ, गंगाप्रसाद पाण्डेय,पृ. सं.-158)

निराला ने मृत्यु और विषाद पर बहुत सी कविताएं लिखी हैं। इनमें और पीड़ावादी रचनाओं में बहुत बड़ा अन्तर है। मैं नीर भरी दुख की बादली या पीड़ा में तुमको ढूँढूँगी पीड़ा- इस परम्परा की रचनाओं में जो भावात्मक सार है, निराला की कविताओं के भाव-बोध का स्तर उससे भिन्न है। चिंता में सो जाने की आकांक्षा व्यक्त करने वाली कविताएँ, अपना-अपना सलीब ढोने वाली सैकड़ो दर्द भरी रचनाएँ आजादी मिलने से पहले और बाद को काफी संख्या में लिखी गयीं। हलके स्तर की भावुकता और उदात्त करूण रस में जो अन्तर है, वह इन कविताओं और निराला की रचनाओं में है। आत्मपीड़न के चित्रो द्वारा अपने प्रति दूसरों की करूणा उभारने का भाव ऐतिहासिक महत्व यह है कि उन्होंने समझा कि भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन की धुरी है - किसान-क्रान्ति, साम्राज्यवाद के मुख्य समर्थक सामन्तों के खिलाफ जमीन पर अधिकार करने के लिए किसानों का संघर्ष। आजाद होने के लगभग पच्चीस वर्ष बाद देश में तरह-तरह के भूमि आन्दोलन हो रहे हैं, उसमें निराला के क्रान्तिकारी दृष्टिकोण की सच्चाई मालूम होती है। निराला के राजनीतिक दृष्टिकोण की क्रान्तिकारी विशेषता दूसरे महायुद्ध के दौरान और उसकी समाप्ति पर लिखी अनेक कविताओं में दिखाई देती है।

मिल-मालिकों, जमींदारों और अंग्रेजों के 'हृदय परिवर्तन' द्वारा मिलने वाली आजादी के प्रति निराला और कांग्रेसी नेताओं के दृष्टिकोण में मौलिक अन्तर था और निराला ने गतकर्म सरोज को अर्पित कर दिये, फिर नया कर्म आरम्भ किया, उन्होंने 'राम की शक्ति-पूजा' लिखी। 'सरोज-स्मृति' से निराला का आधा दुख सरोज की मृत्यु के कारण है, आधा उनके अपने संघर्षों के कारण। उन्होंने जो लिखा था -

मुझ भाग्यहीन की तू सम्बल
युग वर्ष बाद जब हुई विकल,
"दुख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूँ आज जो नहीं कही।" (सरोज स्मृति,पृ. सं.-91,राग विराग)

वह दुख की कथा सरोज के जन्म से पहले शुरू हुई थी और सरोज की मृत्यु के बाद बहुत दिन तक चलती रही। उसी की एक कड़ी है राम की शक्ति-पूजा। आत्म ग्लानि का स्वर यहाँ भी है- धिक जीवन को जो पाता ही आया विरोध। निराला के राम तुलसीदास के राम से भिन्न और भवभूति के राम के निकट हैं, धिक् माम् अधत्यमः भवभूति के राम कहते हैं। आत्मग्लानि का स्वर तो है लेकिन संघर्ष मानो और भी तीव्र हो उठा है। तुलसीदास से युद्ध करने प्रत्यक्ष कोई नहीं आता। मोगल दलबल के जलद यानों से जिन्हें लड़ना था, वे लड़-चुके, तुलसीदास का मुख्य संघर्ष आन्तरिक है, उन्हें मुक्ति पानी है अपने संस्कारों से, रत्नावली के प्रति अपनी आसक्ति से। सरोज-स्मृति में शत्रुदल बिखरा हुआ है, बैसवाड़े के विप्रवर्ग से लेकर संपादकों-प्रकाशकों तक। निराला के दुःख क्लेश के लिए जहाँ यह परिवेश उत्तरदायी है, वहाँ कोई अदृश्य निरति भी मानो उनकी विजय को पराजय में बदल देती है। (पृ. सं.-22-23,राग विराग)

"होगी जय, होगी जय, हे पुरूषोत्तम नवीन!
कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।" (राम की शक्ति-पूजा,पृ. सं.-102,राग विराग)

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

"निराला की काव्य सृष्टि कला के प्रति उनके निःशेष समर्पण से निःसृत है। एक वृहत परिवार के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए भी साहित्य रचना से पृथक विशुद्ध जीवन-यापन के लिए उन्होंने कोई कार्य नहीं किया वर्तमान युग के दायित्व को हृदयगंम कर उसकी पूर्ति के लिए उन्होंने उन समस्त बंधनों से छुटकारा पा लिया था जो किसी भी प्रकार बाधक बन सकते थे। कोई कवि अपनी आत्मिक प्रेरणा के अनुरूप काव्य-सृष्टि तब तक नहीं कर सकता जब तक अपने व्यक्तित्व को उसके जन जीवन के प्रति समर्पित न कर दिया हो। इसके लिए ऐसा पुरूष आवश्यक है जो निर्भीक हो, इसलिए निराला को सामाजिक भूमि पर अनेक कठिनाईयां उठानी पड़ी -

सोचा मन में हत बार-बार
ये कान्यकुब्ज-कुलांगार
खाकर पत्तल में करें छेद,
इस विषय बेलि में विष ही फल,
यह दग्ध मरूस्थल - नहीं सुजल।"

"धिक् वह जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन, जिसके लिए सदा ही किया शोध!
जानकी! हाय, उद्धार प्रिया का हो न सका।"
वह एक और मन रहा राम का जो न थका;
जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय
कर गया भेद वह मायावरण प्राप्त कर जय,
बुद्धि के दुर्ग पहुँचा विद्युत-गति हतचेतन
राम में जगी स्मृति, हुए सजग पा भाव प्रमन।
"यह है उपाय" कह उठे राम ज्यों मन्द्रित घन-
"कहती थीं माता मुझे सदा राजीवनयन!
दो नील कमल हैं शेष अभी, यह पुरश्चरण
पूरा करता हूँ देकर मातः एक नयन।"

परिवेश के अनन्तर निराला की रचनाओं में वैविध्य भी आता रहा जिसके माध्यम से काव्य में तत्कालीन सामाजिक रूढ़ियों एवं जटिलताओं की अभिव्यक्ति होती रही। कवि की प्रगतिवादी रचनाओं में व्यंग्यात्मक स्वर स्पष्ट मुखरित होता है तथा सीधे प्रहार की स्थिति में दिखाई देता है। विदेशी शासन एवं शोषक वर्ग के प्रति अपनी कविता के माध्यम से वे कटुक्ति करते हैं। निराला भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन पर पैनी नजर रखते हैं तथा इनकी प्रगति और भटकावों का विश्लेषण करते हुए वे अपनी एक स्वतंत्र दृष्टि का विकास भी करते हैं -

वह तोड़ती पत्थर;
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर-
वह तोड़ती पत्थर।
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन,
गुरू हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार:-
सामने तरू-मालिका अट्टालिका, प्राकार। (तोड़ती पत्थर)

निराला और प्रगतिवाद

निराला का प्रगतिवादी स्वर सन् 1940 से 50 के मध्य माना जा सकता है, इस युग में कवि ने व्यंग्यात्मक और परिहासात्मक कविताओं के माध्यम से सामाजिक वैषम्यों और आर्थिक दुरव्यवस्था का व्यंग्यपूर्ण आकलन किया है। ऐतिहासिक पहचान की पृष्ठभूमि में कवि जन-साधारण की प्रतिष्ठा का बीड़ा अपनी कविता के माध्यम से उठाता है। इसी वैचारिक ठोस जमीन से उन्होंने उपेक्षित के उन्नयन का सवाल अपनी रचनाओं में उठाया है -

"आया मौसिम, खिला फारस का गुलाब,
बाग पर उसका पड़ा था रोबोदाब,

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

वहीं गंदे में उगा देता हुआ बुत्ता,
पहाड़ी से उठे सर ऐंठकर बोला कुकुरमुत्ता
"अबे, सुन बे, गुलाब,
भूल मत जो पाई खुशबू, रंगोआब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतराता है केपीटलिस्ट!"

निराला के कृतित्व की विशेषता है, काव्य के क्षेत्र में अनुभूतियों की ताजगी। वे एक तो नयी और ताजी अनुभूतियों की काव्य अभिव्यक्ति करते थे और दूसरे, पुरानी अनुभूतियों को भी नये और ताजे रूप में प्रकाशित करने की प्रतिभा उनमें थी। निराला ने काव्यानुभूतियों के लिए कोई लक्ष्मण-रेखा नहीं खींची-उन्होंने विश्व के बहुत क्षेत्र से अनुभूतियों को ग्रहण किया। उनके काव्य की प्रमुख उपलब्धि हैं, अनुभूतियों का व्यापक क्षेत्र तथा उनकी गरिमामय अभिव्यक्ति। उनके काव्य को हम परम्परागत या रूढ़िग्रस्त नहीं कह सकते, क्यों किसी विशेष दृष्टिकोण से ही बंधकर उन्होंने विश्व को नहीं देखा -

वर दे, वीणावादिनी वर दे!
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मन्त्र नव
भारत में भर दे!
काट अन्ध-उर के बन्धन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर;
कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे!(गीतिका)

उनका काव्य, सही माने में, जीवन्त साहित्य के लक्षणों से संयुक्त था: वे सशक्त काव्याभिव्यक्ति के माध्यम से जीवन के प्रति हमारे रूख को बदलने की क्षमता रखते थे। परन्तु इसका यह मतलब, कतई नहीं कि निराला का उद्देश्य किसी 'वाद' का प्रचार या उद्देश्य नहीं था। उनके काव्य में कोई प्रत्यक्ष नैतिक उपदेश हमें नहीं मिलता, वरन् वे तो काव्य-सृष्टि के द्वारा हमारे 'टेम्पर' को प्रभावित करना चाहते थे, जो सभी अनुभूतियों का सामना करने का एकमात्र साधन है। (आधुनिक कविता की यात्रा, डॉ.शम्भूनाथ चतुर्वेदी,पृ.सं.-17)

निराला न तो जीवन में समझौतावादी थे, न साहित्य में, न राजनीति में। आश्चर्य है कि स्वच्छंदतावादी कवियों में ये अकेले कवि हैं जिन्हें गांधीवादी राजनीति कभी भायी नहीं। उन्नीसवीं सदी में भारतजीवन को प्रभावित करने वाली दो प्रमुख विचारधाराएँ समाज में व्याप्त थीं- गांधीवादी विचारधारा और मार्क्सवादी विचारधारा। इन विचारधाराओं का तत्कालीन साहित्य पर गहरा प्रभाव है। मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित प्रगतिवादी काव्यधारा का पथ-प्रशस्त करने में निराला का योगदान कम महत्वपूर्ण नहीं है। छायावादी युग में कविताओं में सामाजिक यथार्थ की चेतना प्रकट हुई थी। 'बादल राग' कविता में कवि ने वर्ग वैषम्य की पहचान का परिचय दिया था जिसमें वर्ग-संघर्ष द्वारा समता की स्थापना का संदेश मिलता है। गांधीवाद के वर्ग समन्वय पर निराला का भरोसा नहीं था, लेकिन हिन्दू-मुस्लिम एकता, हरिजनों का उद्धार आदि कार्यों में वे गांधी जी की विचारधारा के निकट दिखते हैं। छायावादी कविता की सुकुमारी नारी के स्थान पर कोयल-सी काली और कानी नायिकाओं को काव्य में प्रतिष्ठित कर निराला ने अभिजात का तिरस्कार कर सामान्य का समर्थन किया।

ताप-शाप, रोग-शोक तथा दुख-दरिद्र एवं विषमता की पीड़ा से लुंठित-कुंठित विश्व पर, उसके संवेदनात्मक स्पन्दनों पर अमृत की रसधार बहाने की यह अदम्य आकांक्षा निराला के व्यक्तित्व का उज्जवलतम रूप है। विराट सजल घटा की तरह अपने संघर्ष की भीषण ज्वाला

तथा कसक की विद्युत को दबाये हुए कवि स्वयं आत्मज्ञान से द्वन्द्वातीत हो गया है। वह रूद्र-शक्ति से सम्पन्न होते हुए भी शिव है, कठोर पवि होकर भी कुसुम कोमल है, विप्लव का उद्घोषक होकर भी नवजीवन का पोषक है, अतिचेतन होकर भी पागल है, पूरा बमभोला शंकर का साक्षात प्रतिरूप! निराला के व्यक्तित्व और प्रतिमा की विराट बहुमुखता एवं गहन गम्भीरता का मूल प्रतीक उनकी बादल-राग कवितायें हैं, जिनको पूर्णतया हृदयंगम कर लेने के पश्चात् कवि का विराट बादल व्यक्तित्व सम्पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाता है। (निराला का विराट बादल व्यक्तित्व,पृ. सं.-195)

जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर!
चूस लिया है उसका सार,
हाड़-मात्र ही है आधार,
ऐ जीवन के पारावार!(राग-विराग,पृ. सं.-50,बादल राग-6)

"निराला के कृतित्व को केवल छायावादी परिधि में नहीं रखा जा सकता। उन्होंने प्रगतिवादी और प्रयोगवादी प्रवृत्तियों से प्रभावित रचनाएँ भी लिखी। यदि हम यह कहें तो अनुचित न होगी कि निराला की नयी कविता की स्थिति लगभग 'तार सप्तक' की सी है। 'तार सप्तक' की प्रमुख उपलब्धि यही है कि उसमें जीवन की यथार्थ परिस्थितियों-चाहे वह प्रणयाभिव्यक्ति हो या सामाजिक वैषम्य-के साथ रूपगत प्रयोगों का समन्वय किया गया। 'तार सप्तक' के समान ही निराला की नयी कविता में एक ओर प्रगतिवादी-यथार्थवादी प्रवृत्ति उपलब्ध होती है तो दूसरी ओर शिल्पगत नये प्रयोगों का आग्रह भी दिखाई पड़ता है।" (आधुनिक कविता की यात्रा, डॉ.शम्भूनाथ चतुर्वेदी,पृ. सं.-21,22)

वास्तव में निराला जी का जीवन और उनका साहित्य मानवता की विजय का वह जयघोष है, जो युग-युगों तक हमको सत्य की जय का विश्वास, संघर्ष का साहस और मनुष्य की विकासशील महत्व पर श्रद्धा रखने का सम्बल देकर हमें चिरकाल तक प्रगति की प्रेरणा देता रहेगा।निराला ने अपनी नयी कविता में जनसाधारण की भाषा का ही प्रयोग किया है। 'कुकुरमुत्ता', 'नये पत्ते' तथा 'बेला' में निराला ने जन-भाषा को ही काव्य-भाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया। निराला की नयी काव्य-भाषा का गुण है सहजता एवं अकृत्रिमता। यहाँ तक कि हिन्दी में बहुप्रचलित अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग भी उन्होंने किया है, इसका कारण यह है कि निराला की नयी कविता में जन-भावनाओं और सामान्य विषयों का ही प्राधान्य है। यदि निराला की नयी कविता में जन-जीवन की चेतना है, वर्ग-संघर्ष का स्वर है, तो भाषा भी बहुजन द्वारा प्रयुक्त होने वाली है। निराला की काव्य-जीवन-कसौटी पर कसा जाकर खरा सिद्ध होता है। निराला इस अग्नि-परीक्षा में सदा सफल रहे हैं। बौद्धिक प्रामागिकता, नैतिक क्रियाशीलता, सृजनात्मक तीव्रता अथवा आध्यात्मिक प्रसरगा प्रक्रिया की किसी भी कसौटी पर वह अपने सृजन और संवेदना में बराबर खरे सिद्ध हुए हैं, यह किसी से छिपा नहीं।

"निराला का विद्रोह ऐसा ही है। उनका विद्रोह जड़, कठोर, विषम परिस्थितियों और जीवन के रूढ़िगत निर्जीव संस्कारों के प्रति सचेत रहा है। वास्तविकता जो है, उससे विद्रोह करके जो होना चाहिये के प्रति आकर्षण और उसका श्राकलन ही

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उसकी मूल प्रेरणा है। यही कारण है कि उनके विद्रोह में सामूहिक सहज कल्याण के संकल्प से प्रस्फुटित शक्ति, भेज और उद्याम पौरूष का अबाध आवेग पाया जाता है। उन्होंने अपने समय की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, साहित्यिक सभी क्षेत्रों की गलित मान्यताओं, पद्धतियों और निर्जीव, मृत संस्कारों के प्रति निरन्तर विद्रोह किया और उन्हें सुधारने की चेष्टा की तथा अपने सार्थक सृजन से उस दिशा का निर्देश भी किया, जिसे वह वांछनीय समझते थे। साहित्य की भाषा, भाव, छंद, शैली आदि के प्रति उनके विद्रोह में बादल का निबंध, स्वच्छंद, अटूट पर टूट पड़ने वाला उन्माद, विप्लव का प्लावन, बाधा-रहित विराट का गर्जन स्वर और उसकी चंचल-समीर-रथ पर चलने वाली क्षिप्रगति का समावेश है।" (विद्रोही कवि निराला पृ. सं.-171)

"जिन लोगों को निराला जी के व्यक्तिगत-सम्पर्क में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है वे मेरे इस कथन की सत्यता को स्वीकार करेंगे कि उनके जीवन की रग-रग में दार्शनिकता का पुट था। निराला जी बहुत ही भव्य और प्रिय-दर्शन तथा कोमल स्वभाव के थे। वे दर्शनशास्त्र के गम्भीर विवेचक थे। कबीर, दादू, घनानंद तथा रामतीर्थ के पश्चात हिन्दी में इस क्षेत्र में केवल इन्हीं का नाम लिया जाएगा। निराला जी मस्तिष्क से द्वंद्ववादी, परन्तु हृदय से सच्चे कवि थे। भिक्षुक, दीन, संध्या, यमुना आदि कविताओं में हम इनके हृदय के उत्कर्ष को स्पष्ट देख सकते हैं। वास्तव में निराला जी के दर्शन का उत्कर्ष इतना विस्तृत और उच्च है कि इन्हें कवि के अतिरिक्त दार्शनिक भी कहा जा सकता है।" (निराला का प्रारम्भिक-काव्य,पृ. सं.-133) इसके अनुसार निराला का स्वर एक संघर्षरत योद्धा का स्वर है जिसके हृदय में लांकूना की आग धधक रही है किन्तु जिसे अपनी शक्ति का भरोसा है,अपने विजयी होने का विश्वास है।

"निराला के छायावादी कृति की दो विशेषताएँ हैं- एक सौन्दर्य बोध और दूसरी प्रणय-भावना। जहाँ तक सौन्दर्य चेतना का प्रश्न है हम उनके कृतित्व को दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं : एक तो छायावादी सौन्दर्य चेतना जिसके अन्तर्गत नारी और प्रकृति के सौन्दर्य के प्रति वे आकर्षित हुए ; दूसरे, प्रयोगवादी सौन्दर्य बोध जिसके अन्तर्गत सौन्दर्य के साथ ही साथ कुरूपता तथा विकृतियों का भी उन्होंने चित्रण किया। छायावादी सौन्दर्य बोध के अन्तर्गत उन्होंने एक ओर प्रकृति-सौन्दर्य का चित्रण किया तो दूसरी ओर नारी-सौन्दर्य का। दोनों ही प्रकार की सौन्दर्य चेतना की एक विशेषता कही जा सकती है, ऐन्द्रियाकर्षण की। चाहे प्रकृति हो और चाहे नारी निराला का कवि उनके प्रति ऐन्द्रियाकर्षण के मोह को संवरण नहीं कर पाता। प्रकृति सौन्दर्य के जो चित्र निराला ने अंकित किये हैं, उनमें से अधिकांश यौन प्रतीकार्थ रखते हैं।" (आधुनिक कविता की यात्रा, डॉ.शम्भूनाथ चतुर्वेदी,पृ.सं.-18)

महाप्राणा निराला का विद्रोह व्यष्टि और समष्टि के सम्बन्ध में सूत्रों से संगठित एक ऐसी अभिव्यक्ति है जिसका उद्देश्य सम्पूर्ण मानवता का विकास है। ऐसे विद्रोही विश्वास के लिए जो साहित्यकार जितना ही अधिक त्याग और तपस्या कर सकता है, उसका महत्व और प्रभाव उतना ही अधिक स्थायी होता है। जो दान की चरम सीमा का स्पर्श करता है, वही अदावनी रूप-रेखा भी निश्चित करता है। (छायावाद के आधार स्तम्भ,गंगा प्रसाद पाण्डेय,पृ. सं.-170,171)

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भाषा की एक और विशेषता है, संस्कृति-अभिनिविष्ट शब्दों का प्रयोग जिस कवि की भाषा में संस्कृति-अभिनिविष्ट शब्दों का प्रयोग जितना ही अधिक होगा, उसकी जड़े सांस्कृतिक परम्परा में उतनी ही अधिक गहरी होंगी। नयी कविता में अज्ञेय, धर्मवीर भारती, गिरिजाकुमार माथुर और कुँवरनारायण के काव्य में कहीं-कहीं संस्कृति-बोध की हल्की सी झलक मिलती है। वहीं निराला पर्वत-पुत्र होकर भी प्रयात को उसकी कठोर शिलाओं से संघर्ष करना पड़ता है। उसी प्रकार साहित्यकार-युग निर्माता, सृजन-मनीषी को भी समाज की रूढ़ि, जड़-पाषाणी से जूझना ही पड़ता है। पर्वत की सर्वांश अनुकूलता के लिए प्रयात को पत्थर बनना पड़ेगा और समाज की सर्वांश अनुकूलता के लिए साहित्यकार को गतिहीनता स्वीकार करनी पड़ेगी, यह निर्विवाद है। आशय यह है कि गति के लिए, इच्छित विकास और प्रस्तार के लिए संघर्ष आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है। संतति-सुख प्रसव-पीड़ा का सहयात्री है। उसी प्रकार साहित्य समाज-सुख के साथ यदि उसमें वेदना का उद्वेलन भी पैदा करे तो आश्चर्य की बात नहीं। जिस युग में समाज की जड़ता का स्तर जितना ही कठोर होता है, उस युग के साहित्य को उससे उतना ही कठोर संघर्ष भी करना पड़ता है। पर्वत पीछे हट-हट कर नदी के लिए पथ नहीं बनाते। नदी का प्रवेगपूर्ण प्रवाह ही पर्वतों को चीरता हुआ, कूलों का क्रम रचता हुआ अपनी पथ-दिशा निर्मित करता चलता है।

महादेवी जी के निराला विषयक ये शब्द सदा स्मरणीय रहेंगे, "अपनी प्रतिकूल परिस्थितियों से उन्होंने कभी ऐसी हार नहीं मानी जिसे सहा बनाने के लिए हम समझौता कहते हैं। स्वभाव से उन्हें वह निश्छल वीरता मिली है, जो अपने बचाव के प्रयत्न को भी कायरता की संज्ञा देती है। उनकी वीरता राजनीतिक कुशलता नहीं, वह तो साहित्य की एक निष्ठता का प्रयाय है। छल के व्यूह में छिपकर लक्ष्य तक पहुंचने को साहित्य लक्ष्य प्राप्ति नहीं मानता। जो अपने पथ की सभी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष बाधाओं को चुनौती देता हुआ, सभी आघातों को हृदय पर झेलता हुआ लक्ष्य तक पहुंचता है उसी को युगस्त्रष्टा साहित्यकार कह सकते हैं। निरालाजी ऐसे ही विद्रोही कलाकार है। जिन अनुभवों के दंशन का विष साधारण मनुष्य की आत्मा को मूर्छित करके उसके सारे जीवन को विषाक्त बना देता है, उसी से उन्होंने सतत् जागरूकता और मानवता का अमृत प्राप्त किया है'-

"मैं अकेला
देखता हूँ, आ रही
मेरे दिवस की सान्ध्य वेला,
पके आधे बाल मेरे,
हुए निष्प्रभ गाल मेरे,
चाल मेरी मंद होती आ रही,
हट रहा मेला।"

सन्दर्भ ग्रंथ

1. कृष्णन; डॉ.सर्वेपल्लि राधा, धर्म और समाज, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली

2. गर्ग; प्रतिभा- छायावादी कवियों की नारी भावना; प्रकाशक-जवाहर पुस्तकालय, सदर बाजार मथुरा, 1987

3. चतुर्वेदी; डॉ.शंभूनाथ, आधुनिक कविता की यात्रा, सुलभ प्रकाशन, 17 अशोक मार्ग, लखनऊ, 1983

4. पाण्डेय; गंगा प्रसाद, छायावाद के आधार स्तम्भ, लिपि प्रकाशन, ई 5/20 कृष्णानगर, दिल्ली-51, प्रथम संस्करण, 1971

5. पाण्डेय; सुधाकर, आधुनिक हिंदी साहित्य मूल्य और मान्यताएं, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-1979

6. शुक्ल; आ. रामचन्द्र-हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

7. शर्मा,राम विलास,निराला की साहित्य-साधना-1, राज कमल प्रकाशन, नई दिल्ली